जमुना बीनी की तीन कविताएँ

(1)

नदी के दो पाट

तुम्हारी अधिकांश बातें
मुझे समझ
नहीं आती
बिल्कुल दूसरी बोली
बोलने लगे हो तुम
तुम्हारा पहनावा विचित्र
तुम्हारी आदतें अजीब
तुम वह हो
पर
वह नहीं
जिसे मैं जानता था।

आज
सालों बाद
हम मिलें
तुम तो जैसे कोई
खोजी पर्यटक
साहस और रोमांच की खोज में
मेरी दुनिया
देखने आये।

अचरज का विषय हूँ
मैं तुम्हारे लिए
हाँ !!
आदिम संस्कृति के साथ
जीता एक आदिवासी
अजायबघर का
आदर्श नमूना।

सुविधा
भोगने की ललक
ले गया दूर तुम्हें हमारे गाँव से
उन लोगों से दूर
जो तुम्हें
जानता था, समझता था
अपना मानता था।

तुमने अपना लिया
न्यीपाक[1] के तौर-तरीके
तुम्हारे और मेरे बीच
दूरी इतनी बढ़ गई
जैसे
नदी के दो पाट।

---

1. न्यीपाक – गैर आदिवासी या मैदानी वासी

(2)

तथाकथित

भगत सिंह , सुखदेव को
हम जानते हैं पर क्या
मातमुर जामोह[1] मोजी रीबा[2] का
नाम सुना तुमने कभी ?

हमें पता है
गाय तुम्हारे लिए
महज एक पशु नहीं
एक जीवित
श्रद्धापूरित संपत्ति है
लेकिन मिथुन[3]
किस पशु का नाम है
यह तुम नहीं जानते।

हमने अपना लिया तुम्हारा पहनावा
खान-पान, बोली
सवाल यह है
तुमने कितना हमें अपनाया ?

हमारे ऊपर बहुत कुछ
और बहुत सारा
लिखा तुमने।

कितना अंतर है
तुम्हारी

और
हमारी लेखनी में
तुम्हारा लेखन
सहानुभूति से भरा
और
हमारा लेखन
आत्मसम्मान से मदमाता।

---

1. मातमुर जामोह – अरुणाचली स्वतंत्रता सेनानी
2. मोजी रीबा- अरुणाचली स्वतन्त्रता सेनानी
3. मिथुन- भैंसानुमा दिखने वाला पशु जिसका अरुणाचली समाज में सांस्कृतिक-धार्मिक एवं आर्थिक महत्त्व है

(3)
लौटने के इंतजार में

मैं वाङपान की
बूढ़ी माँ से मिली
हिम्मत बटोर कर पूछ ही लिया-
'वाङपान की याद नहीं आती ?'

नम आँखें मुझे देर तक ताकती रही
एक अर्थपूर्ण
गहरी साँस भरकर फिर बोली-
अरसा हो गया
उसे देखे
कलेजे पर पत्थर रखकर
यहाँ से भगाया था
जंगल-आदमी1 उसे जबरन उठाकर
ले जाते अपने दल में शामिल करने।

हो न हो
मुण्ड-आखेटकों की
वीर भूमि को
जरूर किसी का
अभिशाप लगा है।
बरसों से
शांति और प्रगति
इस भूमि से रूठी हुई है।
मैंने उनकी
झुर्रियों से बने नक्काशीदार हाथ को
थाम उन्हें बतलाया-
'वाङपान घर लौटना चाहता है'
वह सकपकाकर बोली- 'नहीं, नहीं !
उसे पूछो
जंगल-आदमी या भारतीय आर्मी
दोनों में से
किसकी गोली का स्वाद पसंद है ?

बेटा मेरा
दूर सही पर है जिंदा
माँ के मन को इतनी तसल्ली काफी है।

इधर मुक्ति कहाँ
जंगल-आदमी का शिकंजा
और
भारतीय आर्मी का चंगुल
इनके बीच पीसने को अभिशप्त
हमारा युवा

वापसी में बार बार मैं
उन तमाम
नोक्टे-वांचो[2] युवाओं के बारे
सोचे जा रही थी
जिनको इंतजार है
अमन बहाली का
घर लौटने का।

---

1. जंगल आदमी – एन एस सी एन उग्रवादी
2. नोक्टे-वांचो – नोक्टे और वांचो आदिवासी

*(**लेखकीय परिचय** : अरुणाचल प्रदेश की सुपरिचित कवयित्री एवं कहानीकार डॉ. जमुना बीनी राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में सह प्रोफेसर हैं। मोबा: 9436044327, ई-मेल : jamuna.bini@rgu.ac.in)*